ALFA INVESTMENTS

राज कामिक्स

मूल्य 6.00 संख्या 455

1043/2

नज़रा

भोकाल

इस कॉमिक्स के साथ
भोकाल का एक
आकर्षक स्टीकर
मुफ्त

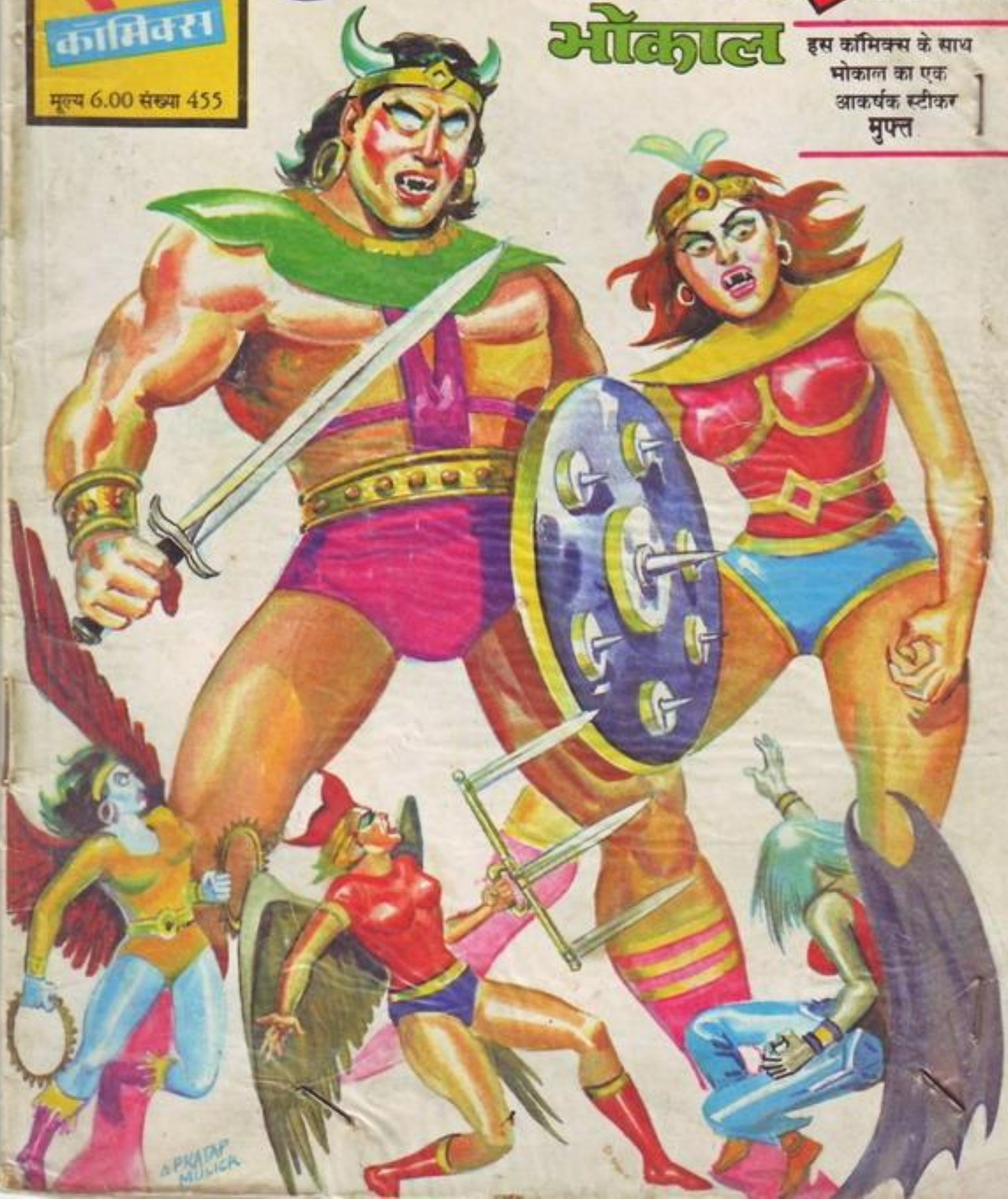

चुड़ैल

लेखक : संजय गुप्ता
चित्रांकन : जसवंत सिंह नार • सम्पादन : मनीष गुप्ता

विकासनगर में अचानक फूट पड़ी नरक की आग —

ऐसी ही एक नरक की आग ने जला दी शैतान की आंखें, राजा विकासमोहन की बांह व वेणु को कर दिया बेहोश —

आह! मेरी आंखें!

मेरा हाथ!

इधर महाचुड़ैल तन्त्रा ने बनाई तीन चुड़ैलें बाजला, उलूक और चमजोई —

तुम तीनों की जान इन तीन पक्षियों में सुरक्षित है। अब तुम विकास-नगर जाकर वहां से दस हजार बलियां लेकर आओ।

विकासनगर पहुचकर तीनों ने निर्दोष लोगों को पकड़-पकड़कर उसे नरक की आग में झोंकना शुरू कर दिया —

ही-ही-ही पाजी!

खी-खी-खी नासपीटे!

दुष्ट!

महाबली भोकाल व दुरीन उन्हें जीतने में असफल रहे, तब भोकाल ने उठाई एक कसम —

इन निर्दोषों को मैं ना बचा सका। इनकी मृत्यु का जिम्मेवार मैं खुद को मानते हुए कसम खाता हूं कि इन तीनों चुड़ैलों का खात्मा करने के बाद यह जीवन त्याग दूंगा।

नहीं!

फिर हुई उन दोनों की तीन चुड़ैलों से एक भयानक मुठभेड़। जिसके अंत में हंसने वाली चुड़ैलों ने यकायक तिलिस्मी आइना दिखाकर भोकाल एवं दुरीन दोनों को सम्मोहित करके तन्त्रा का गुलाम बना दिया।

उफ!

ही-ही-ही

फिर वे दोनों एक भयंकर रूप में निकल पड़े विकासनगर-वासियों के संहार पर —

यहां तक आप तीन चुड़ैलों में पढ़ चुके थे, अब आगे पढ़ें ~
भोकाल ने विकासनगर में तबाही मचा रखी है।
तबाही
तबाही
तबाही
उसके दिमाग में गूंज रहे थे केवल यही शब्द –

उसकी ताकत भी उससे बिलकुल पीछे नहीं थी।
तबाही
तबाही
तबाही

अपने ही नगरवासियों को मार रहे थे दोनों –
हाय! रक्षक ही भक्षक बन गए!

अपना ही नगर बरबाद कर रहे थे दोनों –
बचाओ
अरे! बचाने कौन आएगा! बचाने वाले ही तो मारे पेटुले हैं!
आह!
2

सूचना मिलते ही घटनास्थल पर सेना सहित हाजिर हो गए सेनापति प्रवीनसिंह —

उफ! महाबली भोकाल और तुरीन इस रूप में! इन्हें कैसे रोक पाऊंगा मैं?

असमंजस में पड़ गया था सेनापति! आखिर देश की रक्षा करने वालों पर हथियार कैसे उठाए —

किन्तु अपनी नजरों के सामने मरती, कटती प्रजा को कैसे देख सकता था वह —

सैनिकों! मार गिराओ इन दोनों को! शीघ्र!

? ? ?

आज्ञाकारी सैनिकों को यकायक विश्वास ना हुआ! अपने प्रिय भोकाल व तुरीन को मार गिराने के लिए उनके हाथ ना उठ सके!

क्रोध से कांप रहा था प्रवीनसिंह का स्वर —

आज्ञा का पालन हो! आक्रमण हो!

अपना कर्तव्य ध्यान हो आया उन्हें! सेनानायक की आज्ञा पालन करने के लिए उठ गए हाथ —

हथियार चले भोकाल व तुरीन को मार गिराने को —

किन्तु वे तीर व भाले तो बने थे मानवों से युद्ध लड़ने के लिए। दैत्याकार चुड़ैल व राक्षसों पर तो केवल कांटों का सा असर किया उन्होंने —

हो-हो-हो! तबाही-तबाही!

हा-हा-हा! तबाही-तबाही!

अब उनका ध्यान उन सैनिकों की तरफ पलट गया —

तुरीन की वे प्रलयंकारी किरणें जो सदा उन सैनिकों के सहयोग के लिये निकली थीं आज निकल रही थीं उनकी तबाही के लिए —

हाय

आह

जल मरा

भोकाल की तलवार जब-जब उठी तब-तब जालिमों का हुआ विनाश, किंतु आज वह तलवार उठी जालिमों की तरह जुल्म करने के लिए-
सर्राटा
सैनिकों की गर्दनें उड़ाने के पश्चात्-

सेनापति को मारने के लिए उठी तलवार-

सेनापति प्रवीनसिंह की आंखों के आगे छा उठा अंधेरा तब जबकि तलवार उसका रथ तोड़ती हुई उसके सामने एक दीवार के समान खड़ी हो गई-

भोकाल ने उछाल फेंका उसे-

आकाश की सैर को उड़ चला सेनापति प्रवीनसिंह का जिस्म-

उन तबाही के दृश्यों को देख खुश हो रही थीं तीन चुड़ैलें-
ही-ही-ही! हमें मारने चले थे दुष्ट! क्या हालत बना दी देखो! ही-ही-ही!
ठहाके गूंज रहे थे उनके।

महाचुडैल तन्त्रा उनके ठहाके बन्द करने के लिए बढ़ रही थी–

अब तुम्हारी कोई जरूरत नहीं रह गई! तुम तीनों निकम्मी रह गई थी!

उसे देख तीनों पक्षी बुरी तरह चीख उठे!

पिंजरे खोल बारी-बारी से तीनों की गरदनें मरोड़ती चली गई तन्त्रा –

तीनों के सांसों की तारें टूट गईं।

और इधर तीनों चुडैलें भी धरती को जा लगीं

खेल खत्म!

मौत आ गई!

मारी गई चमजोई!

उधर महाराज विकासमोहन के पास पहुंची खबरें –

महाराज! सूचना यह है कि महाबली भोकाल व तुरीन को किसी राक्षसी चाल के वशीभूत कर लिया गया है।

उनके हृदय पर हथौड़े से बज रही थी यह खबर!

सम्मोहन सम्राट शूतान के कान फाड़ देने के लिए काफी थी यह खबर –

वे दोनों राक्षस रूप में नगर तबाह कर रहे हैं। सैकड़ों प्रजावासी मारे जा चुके उनके हाथों। सेनापति प्रवीनसिंह भी उन्हें रोकने में नाकामयाब रहे हैं।

शूतान का शरीर बुरी तरह कसमसाया!

वह उठ बैठा –

मेरे मित्रों की कैसी दुर्गति हो रही है। लानत है मुझ पर! मैं यहां आराम कर रहा हूं।

सम्मोहन सम्राट! यह आप क्या कर रहे हैं! आपकी आंखों के ज़ख्म अभी भरे नहीं हैं।

रोकते ही रह गए वैद्यराज और...

...शूतान ने अपनी आंखों पर चढ़ी पट्टी भी नोंच फेंकी –

अगर उन्हें कुछ हो गया तो इन आंखों का तो क्या, इस जीवन का ही कोई महत्व ना रह जाएगा!

नहीं ई ई... यह क्या किया आपने! आपकी आंखें सदा के लिए चली जायेंगी अगर ज़ख्म फैल गये तो!

नहीं... शूतान रुको!

किन्तु अब उसे कोई नहीं रोक सकता था।

उसकी निगाहों के सामने तो केवल वे दृश्य दौड़ रहे थे। जब-जब उसके लिये उसके मित्र अपनी जान पर खेल गए थे –

मुझे ये आंखें केवल अपने मित्रों को खुशहाल देखने के लिये चाहिए!

मित्रता का कैसा जज्बा था उन सबके हृदयों में –

तुरन्त वह दौड़ पड़ा द्वार की ओर –

मैं जा रहा हूं महाराज और देखना अपने मित्रों को सही-सलामत लेकर ही लौटूंगा!

देखते ही देखते वह द्वार भी पार कर गया –

सन्न से खड़े रह गये दोनों –

अब यह वापस नहीं आता!

ऐसा ना कहिये वैद्यराज!

तबाही के लिये उठे हाथ के आगे आ खड़ा हुआ शूतान –

तुरीन! राजकुमारी तुरीन!

मेरी आंखों में देखो!

मित्रों की ज़िंदगी की खातिर उसके अंदर से अपनी जान के प्रति भय जाता रहा था!

सम्मोहन सकाट अपना जादू चलाने की कोशिश कर रहा था —

तबाही-तबाही तबाही!

मेरी आंखों में देखो तुरीन!

इस कोशिश में उसकी आंखों में टीस उठने लगी —

इसके दिमाग पर चढ़ा जाल तोड़कर रहूंगा मैं!

किन्तु उसने अपना प्रयास जारी रखा —

कुछ हुआ तो —

तबाही

तबा...ही

ही

त..बा..ही

तबा..

मैं यह क्या उफ! तबाही!

अपने सम्मोहन के जोर पर वह तुरीन को झंझोड़ने की कोशिश कर रहा था —

जागो तुरीन! खुद को संभालो! तुम हो ओसाक गृह की राजकुमारी तुरीन!

तुरीन... राजकुमारी... ओसाक... तबाही

किन्तु शूतान भी पीछे नहीं था —

याद करो शूतान को।

याद करो भोकाल को।

बुरी तरह फंसी हुई थी वह —

नहीं केवल तबाही!

भयंकर जलजला सा उठा-

ओह!

आह हा

मैं..मैं हूं तुरीन।

मुझे गुलाम बना लिया था एक आइना दिखाकर!

अब उस आइने की चमक धूमिल पड़ रही है!

देखते ही देखते तुरीन वापस अपने पूर्व रूप में लौटने लगी -

किन्तु उसका मस्तिष्क शायद उस कड़ी मानसिक परीक्षा को संभाल न सका, इसीलिए वह अपने होश खो बैठी -

उफ! आह!

ओह! क्या हुआ तुम्हें तुरीन?

उसे संभालने के लिये शूतान आगे बढ़ा -

समय-समय पर जीवन रक्षा करने वाला भोकाल आज शूतान का जीवन हरने को तत्पर था-

तबाही

किन्तु उस जबरदस्त वार ने उसे दूर धकेल दिया -

तबाही तबाही तबाही!

ऐसी स्थिति में शूतान अपना जीवन बचाए या भोकाल का! भोकाल शूतान का दुश्मन बना हुआ था या खुद अपना?

शूतान भरपूर प्रयास के पश्चात् उठ खड़ा हुआ। हैरतअंगेज अंग वह एक भी वार सहने लायक नहीं रह गया था –

मार ले दोस्त! मार ले मुझ पर तेरे अहसानों का बहुत बोझ चढ़ चुका है।

भोकाल को बचाने की तीव्र इच्छाशक्ति ही उसे खड़े होने का सहारा दिये हुए थी।

उसने घायल आंखों को और फैलाया कि शायद भोकाल की निगाहें पड़ें और वह सम्मोहित हो जाये

मेरी आंखों में देख दोस्त!

वह तो उसे कुचल ही डालता कि यकायक उन फौलादी किरणों ने थाम लिया उसका पैर –

सर्र सर्र सर्र

किन्तु भोकाल तो केवल और केवल तबाही ही देख रहा था–

तबाही तबाही तबाही

शूतान को कुचलने के लिए उसके कदम बढ़े –

तुरीन के किरणों की मार ने महाबली को दिखा दिया कि ऊंट पहाड़ के नीचे आ गया है –

आह!

तुरीन जिसे समय रहते होश आ गया था! बचा लिया उसने सम्मोहन सम्राट को –

हट जाओ शूतान, अभी इसके होश ठिकाने नहीं हैं।

इसके होश मेरे हटने से नहीं, मेरे अड़ने से ठिकाने लगेंगे!

तुरीन की प्रलयंकारी किरणों ने उसे आटे-दाल का भाव मालूम करा दिया-

धड़ाम से धरती पर गिरा वह-

सह ना सका महाबली उसकी आंखों की शक्ति को-

असका सारा वजूद हिल गया-

शैतान के कदमों में! शैतान की नजरों के सामने थी अब भोकाल की नजरें-

अब तुझे मेरी ताकत से टकराना ही पड़ेगा।

टुकड़े-टुकड़े होने लगा उसके अन्दर का शैतान व इंसान-

तबाही तबाही

आह

महाबली भोकाल के शरीर में उठ रहा था जलजला –

महाबली भोकाल, परीलोक के राजकुमार, तबाही के नहीं, शांति के दूत हो तुम !

बहुत जोरों से तड़पा भोकाल का शरीर –

आधरर्र...

होश में आओ मित्र... आह !

भोकाल से भी जोरों से उछला शूतान् का शरीर !

महापुरोहित का सम्मोहन जाल टूटता चला गया और भोकाल अपने पूर्व रूप में लौटने लगा –

सफल हुआ था शूतान किन्तु...

खुद वह अब मरणासन्न पड़ था –

शूतान, शूतान आंखें खोलो ! आंखें खोलो शूतान देखो ! भोकाल भी ठीक हो गया है।

लेकिन उसने आंखें ना खोली –

भोकाल दौड़ता हुआ दोनों के निकट आया –

इसे क्या हुआ तुरीन, बोलो जल्दी, मेरा हृदय अनिष्ट की आशंका से थर्रा रहा है।

हमें जल्दी इसे राजमहल पहुंचाना होगा चिकित्सा के लिए !

शूतान को कंधे पर उठा कर चला भोकाल राजमहल की ओर –

ना जाने क्यों ऐसा महसूस हो रहा है कि मैं एक गहरी नींद से जागा हूं और नींद के...

... दौरान भारी अनर्थ हो चुका है।

अपने द्वारा किए गए हत्याकांड व तबाही के बारे में जान कर तूफान टूटने वाला था भोकाल पर।

शूतान को वैद्यराज को सौंपकर भोकाल पहुंचा महाराज के पास-

आओ भोकाल! हमें तुम्हारा ही इंतजार था।

कहिये महाराज मेरी क्या आवश्यकता महसूस हो रही है आपको ?

महाराज विकासमोहन ने उन दोनों के शैतान बनने, बीन चुड़ैलों के मरने से लेकर...

...भयंकर हत्याकाण्ड एवं तबाही की सम्पूर्ण घटना सुना दी उसे-

उफ! कैसा अनर्थ हो चुका हमारे हाथों!

हां और विकास नगर का कानून इसकी सजा मौत बताता है।

अचानक यह क्या विस्फोट सा किया महाराज ने -

तभी बीसियों सैनिक कक्ष में प्रवेश करते चले गये-

गिरफ्तार कर लो इसे और काल-कोठरी में डाल दो। कल दरबार-ए-आम में इसका फैसला किया जायेगा।

भोकाल की निगाहों के सामने किसी भयंकर सपने की तरह गुजरते जा रहे थे वे दृश्य

वह सब खड़ा देखता रहा और सैनिकों ने उसको पहना दी बेड़ियां —

कुछ ही देर बाद जब उसे इस कठोर सत्य का अहसास हुआ। उसे काल-कोठरी में पहुंचा दिया गया था -

उफ! यह दुर्दिन भी लिखा था नसीब में!

उफ! कैसी कठोर परिस्थिति से गुजर रहा था परीलोक का राजकुमार।

कुछ क्षण पश्चात् उन मंद आवाजों को सुनकर चौंका वह-

भोकाल..भोकाल क्या तुम मेरी आवाज सुन रहे हो ?

अरे! यह तो तुरीन की आवाज लगती है तो क्या उसे भी कैद कर लिया गया है। उफ! नहीं।

हां-हां बोलो तुरीन मुझे सुन रहा है।

वह भी चिल्ला उठा -

सौन्दर्य सम्राज्ञी को भी कैद कर लिया गया था –

मैं तुम्हारे पास आती हूं भोकाल! तुम दीवार के पास से हट जाओ!

ऐसी छोटी-मोटी दीवारें उन्हें क्या रोक सकती थीं –

भोकाल से जा लिपटी वह –

ओह! प्रिय! नसीब ने यह कैसा खेल खेला हमारे साथ!

धैर्य रखो तुरीन! जो भी होगा ठीक होगा!

चलो भोकाल! निकल चलें यहां से। अब हम विकासनगर छोड़ देंगे!

क्या कहती हो प्रिय! हमने गुनाह किया है तो सजा नहीं भुगतेंगे क्या?

क्या तुम वाकई सजा भुगतने का विचार कर रहे हो!

क्यों नहीं! हमने कानूनन जुर्म किया है। और यदि उसकी सजा सजाए-मौत है तो वह हम भुगतेंगे। क्योंकि कानून सबके लिए बराबर होता है। मजबूर के लिए भी और मजबूत के लिए भी, प्रजा के लिये भी और राजा के लिए भी!

दृढ़ता से कहता चला गया वह –

कुछ क्षण सोचने के पश्चात् वह बोली –

ठीक है। मैं भी हर राह पे तुम्हारे साथ हूं। किन्तु अभी तुम कुछ भूल रहे हो।

क्या भूल गया मैं?

नरक की आग को! तीन चुड़ैलों की आकस्मिक मौत को। इन सबके पीछे किसी बहुत बड़ी शक्ति

... का हाथ है भोकाल, जो मेरे और तुम्हारे बाद विकासनगर में मौत का ताण्डव मचा देगी।

हां! ठीक कहती हो तुम और तब कोई नहीं होगा यहां जो इस मौत के ताण्डव को रोक सके।

तो क्यों ना हम पहले उस शैतानी शक्ति को समाप्त कर दें!

कैसे दीगर थे दोनों जो कि ऐसी परिस्थिति में भी विकास नगर वासियों का ही भला सोच रहे थे!

परन्तु सजा पा लेने से पूर्व हम यह भी नहीं कर सकते, क्योंकि यदि हम अभी यहां से निकल गए तो क्या सोचेंगे महाराज व क्या सोचेंगे नगरवासी!

उन पर हमारा कितना बुरा प्रभाव पड़ेगा!

किन्तु सजा-ए-मौत के बाद वह काम कैसे अंजाम देंगे हम?

अजीब चक्रव्यूह में फंस गये थे दोनों।

चलो! कल की कल सोचेंगे! तुम अपनी कोठरी में जाकर आराम करो!

जीवन के आखरी क्षण तो अपने साथ गुजार लेने दो प्रिय!

कितना प्रेमवश आग्रह था तुरीन की आवाज में!

बड़े ही गंभीर शब्द निकले भोकाल के मुंह से —

मर्यादाओं का दामन तो आखरी सांस तक नहीं छोड़ना है तुरीन!

ओह! भोकाल तुम महान हो!

तुरीन अपनी कोठरी की तरफ बढ़ चली।

अपने बच्चों के ननिहाल नाइवाड़ नगर से अभी-अभी वापस लौटे महारानी मोहिनी, राजकुमार अंकित व राजकुमारी श्वेता ने कोहराम मचाया हुआ था।

उन दोनों के अहसानों को कैसे भूल रहा है विकासनगर का कानून! आज वे ना होते तो क्या विकासनगर को फूचांग दादा, मन्ना, गोगा, भदवा, जादूगर भाड़झोंक व नासन जैसे शैतान छोड़ देते क्या?

महारानी तो भोकाल व तुरीन की सजाएं माफ कराने को प्रतिज्ञाबद्ध लग रही थीं —

और आप स्वयं महाराज! आपने भी तो विकांडा बन कर शाही खजाना लूटा। आपने खुद को सजा क्यों नहीं दी?

हमने किसी की हत्या नहीं की थी प्रिय! खजाना भी वापस आ गया था!

अपराध तो अपराध है चाहे हत्या हो या लूट हो!

कोई जवाब देते महाराज उससे पहले ही —

चीख उठी राजकुमारी श्वेता मोहन-

मौकाल चाचा ही तो आपकी बिटिया को सिलिम्मी ओलम्पाक से बचाकर लाये थे पिताश्री !

हम राज नियमों के अधीन हैं पुत्री !

राजकुमार अंकित मोहन भी पीछे ना रहा-

आप राजा हैं आपको उनके लिए कानून व राज नियम बदल देना चाहिये !

निजी स्वार्थवश राज नियम व कानून बदलना राज सिंहासन व राज परम्परा की तौहीन होगी जो हम कदापि ना करेंगे !

महाराज भी कर्तव्य पालन के कटिबद्ध लग रहे थे !

कर्कश स्वर में कह उठी नन्ही बालिका—

तो हमने भी फैसला किया कि जो सजा उन्हें मिलेगी हम उस सजा में उनके भागीदार बनेंगे !

नन्हें राजकुमार ने भी अपना फैसला कह सुनाया—

हमारा भी यही निर्णय है।

तो ठीक है एक निश्चय हमने भी कर लिया है।

महारानी ने भी अपना निर्णय सुना दिया—

हमने भी यही निश्चय किया है कि हम उनके साथ सजा भुगतेंगे।

कुछ ही क्षणोंपरांत कक्ष में घुसते चले गये सैनिक-

गिरफ्तार कर लो इन तीनों को और कैदखाने में ले जाओ ! कल उनकी सजा के पश्चात इन्हें छोड़ा जाएगा।

कैसा निश्चय किया महाराज ने-

अवाक खड़े देखते रह गये तीनों अपनी गिरफ्तारी को !

अगली प्रातः विकासनगर राजमहल का प्रांगण नगरवासियों से खचाखच भरा हुआ था। एक तरफ बंदी बने खड़े थे भोकाल व तुरीन। तो दूसरी तरफ सजा सुनाने के लिये खड़े थे राजा विकासमोहन –

नगरवासियो, इन दोनों ने शैतान बनकर आप सबको, जनजीवन की जो हानि पहुंचाई है। उसकी सजा भी इन्हें आप ही देंगे। इन्हें पत्थर मार-मारकर मौत के मुंह में पहुंचाकर।

हत्यारा भोकाल हाय-हाय

हत्यारी तुरीन हाय-हाय

इस क्रूरतापूर्ण फैसले से नगरवासियों के बीच खुशी की लहर दौड़ गई।

उन दोनों को घेरे सैनिक हूट गए और राजा की आज्ञा पाते ही प्रजावासी उन दोनों पर पत्थर उठा-उठाकर फेंकने लगे –

हत्यारे ने मेरे बापू को मार डाला था।

मारो मारो मार डालो

हत्यारिन ने मेरे बच्चों को रौंद डाला था।

क्या हो गया था विकासनगर वासियों को, उन्हें देवताओं सी सूरतें राक्षसी क्यों लगने लगी थीं –

क्या हो गया था वह प्यार, वह इज्जत जो तिलिस्मी ओलम्पाक के इन खिलाड़ियों के प्रति उनके दिल में कूट-कूट के भरे थे।

हर पत्थर को मुस्कराकर स्वीकार कर रहा था भोकाल–

और मारो! मेरा प्रायश्चित इसी तरह पूरा हो सकेगा।

भोकाल का साथ दे रही थी तुरीन–

कितना महान है मेरा प्रीतम! उसकी महानता की ऊंचाइयों के आगे यह तकलीफ कुछ भी नहीं!

आत्मिक शक्ति दोनों को ही शारीरिक दर्द सहने का बल दे रही थी।

स्वामिभक्ति की पराकाष्ठा, प्यार का उज्ज्वल रूप प्रदर्शित करती कपाला चिपट गई थी तुरीन के बदन से–

म्याऊं ऊं ऊं म्याऊं ऊं ऊं

उफ! हट जा! कपाला हट जा! अरी पगली तू क्यों अपनी जान देने पर तुली है?

दर्द भरी अपनी ही भाषा में वह यही कहती प्रतीत हो रही थी कि जब जिए साथ हैं तो मरेंगे भी साथ ही–

दो-चार पत्थरों की मार से ही गिर पड़ी बेचारी–

कपाला ओह! कपाला

कितनी ही देर चलता रहा यह खूनी खेल–

मेरा पत्थर हाथ तोड़ेगा

मेरा नाक तोड़ेगा।

मैं आंखों को निशाना बना रहा हूं।

मैं तो मारे जा रहा हूं जहां भी लगे।

तब रुकी वह उन्मादी भीड़ जब बुरी तरह थक गई –

चलो रे! बहुत हुआ। मर चुके होंगे अब तक तो!

चलो भाई! मुझे अपना खेल जीतना है।

हां, मुझे घर पहुंचकर खाना बनाना है।

हां चलो! मैंने भी निशाने मार-मारकर अपना निशाना पक्का कर लिया है।

कुछ ही देर में नगरवासियों की भीड़ से प्रांगण खाली हो गया –

बाकी बचे राजअधिकारी, राजसैनिक, महाराज व ...

...दो निश्चल शरीर –

इन दोनों की लाशों को नीचे उतारो।

दोनों के जिस्म तुरन्त उतार लिये गये –

ले जाओ इन्हें और भेड़ियों के नोचने के लिए जंगल में फेंक आओ।

सैनिक महाराज की आज्ञा पालन करने के लिए चल पड़े।

विकासनगर के जंगल में डाल दिये गये थे तीनों जिस्म –

गीदड़ों, सियार व लोमड़ियों का भोजन छोड़कर वे चल पड़े।

तभी झाड़ियों को चीरता प्रकट हुआ तान्त्रिक टिल्लू –

उफ! देश के रखवालों की क्या दुर्गति की है।

अंकित, श्वेता व महारानी के पश्चात् केवल यही ऐसा दिखाई पड़ा...

जिसके दिल में इनके प्रति क्या भाव दिखाई पड़ा...

मंत्रित चादर दिखाएगी अब अपना कमाल।

क्या गोरखधन्धा है यह ?

बड़ी तेजी से विकासनगर का जनजीवन सामान्य होता जा रहा था —

नरक की आगें अभी भी लपलपा रही थीं, किन्तु अब नगरवासी उनसे बचकर चलते थे —

परन्तु यह शांति जिसको मंजूर ना थी उसने भेज दिए दो शैतान —

तोतला सारे विलासनदर तो तबाह तर देदा!

हहहह! हकला दस हजार ब... बालियां पूरी करेगा!

उफ! दो और बलाएं!

तोतला और हकला को देख रूहें कांप गईं उनकी !

निर्दोषों को उठा-उठाकर नरक की आग में झोंकना आरम्भ किया उन्होंने —

हहह... हमारे पास फफफ... फालतू समय नहीं है, जल्दी करो!

चल बे तीड़ जीत्ता क्या तरेदा!

हाय! मर गया

भयंकर तबाही मचानी थी अब उन्होंने —

एक के बाद एक बलि दी जाने लगी —

भ-भ- भागने से प-प-पीछा थोड़े ही छूटेगा!

पदलों बलि ते बाद सीधे स्वर्द जाओ दे!

त्राहि-त्राहि मच गई !

नगर प्रहरी आये —

हा हा हा

नहीं बचाओ

अबे चुपकर! हम तो खुद बचाने आये हैं हमें कौन बचाने आयेगा?

वे नाकामयाब हो गये !

सेना आई —

सससस सबको ठठ ठिकाने लगा देंगे!

तोई नहीं बचेदा हमसे!

वह नाकामयाब हो गई !

तब महाराज विकासमोहन स्वयं आये युद्ध लड़ने –

आओ राजा! तिससे लड़ोदे, हमसे या मुझसे?

तूतूतू ही लड़ले म...मैं अपना कक्ष काम करता हूं।

तुम दोनों को ही मौत के घाट उतारने आया हूं मैं।

बड़ी जांबाजी के साथ हल्ला बोला महाराज ने –

बहुत दिनों से मेरी तलवार जंग खा रही थी। अब तुम्हारे खून से धुलेगा इसका जंग!

महाराज का वार रोका तोतला ने।

और एक ही वार में उड़ा दी तलवार –

उफ!

इसका जंद तू अब कभी नहीं धो पायेगा।

अगले वार में काट डाली उसने रथ के दोनों घोड़ों की गरदनें –

इस रथ पर चढ़े-चढ़े तेरी इतनी आवाज भी निकल गई।

आंखों से फूट निकली विनाशकारी किरणों ने रथ को चूर-चूर कर दिया –

अब तुझे धूल चटाऊंगा।

हाय! अब क्या होगा? काश! भोकाल और तुरीन होते तो यह नौबत ना आती।

यह क्या विचार पनप रहा था राजा के दिमाग में।

नगरवासी भी आखिर पुकार ही उठे –

भोकाल व तुरीन के रहते हम पर कभी आंच न आई थी।

हाय! उन्हें मारकर तो हमने अपनी मृत्यु को दावत दे डाली।

ऐसे-ऐसे दैतानों को तो चुटकियों में समाप्त कर देते थे वे।

किन्तु यह उनके प्रति नगरवासियों का प्रेम नहीं, केवल वक्त-जरूरत का स्वार्थ बोल रहा था।

राजा विलासमोहन के सीने से सट गई तोतला की तलवार-

राजा विलासमोहन, अपने भगवान को याद कर ले!

उफ! क्या नसीब में हुकला और तोतला के ही हाथों मरना लिखा था!

तोतला की तलवार की नोक उसकी चमड़ी उधेड़ने को आतुर हो उठी थी!

छनाक की आवाज के साथ तोतला की तलवार से आकर टकराई एक तलवार-

छनाक

तुम!

अहम

आश्चर्य से फटी पड़ रही थीं तीनों की आंखें —

हां, हम!

म्याऊ

भोकाल की तलवार वापस उसके हाथ में पहुंच चुकी थी -

तोतला और हुकला ने एक क्षण भी जाया नहीं किया और दौड़ पड़े -

तू भ-भ-भ- भोकाल को काट। मैं त-त-त तुरीन को चीरता हूं!

तुझे तो काट डालूंगा भोकाल!

तोतला भोकाल से टकराया -

भोकाल की तलवार का सामना फिर भी नहीं कर सकते तुम!

मैं तलवारबाजी छः साल की उम्र से ही करता आ रहा हूं!

तुरीन के हाथों से निकली किरणें टकराईं हुकला के घुटनों से !

अपने शस्त्र लेकर मेरे करीब भी ना पहुंच पायेगा तू !

हाय!

भोकाल पर तोतला ने दौड़ा दी अपनी नेत्रज्वालाएं –

जिन्हें ढाल पर रोका उसने –

तुरीन पर अपनी नेत्रशक्ति का प्रहार कर बैठा हुकला –

ल-ल- लगता है तुझे भस्म करना पड़ेगा

हुकला! यह तो बहुत छोटा सा वार है अभी तूने प्रहारा की ज्वाला तो देखी ही नहीं है।

तुरीन की किरणों ने निष्क्रिय कर दिया नेत्रशक्ति को !

भोकाल की तलवार का जबरदस्त वार सह ना सका तोतला –

मेरा मुकाबला करने के लिए तुझे दस जन्म लेने पड़ेंगे तोतले!

तोतला को उछाल फेंका उसने !

तुरीन ने किया प्रहारा का वार –

खुद को भस्म होने से बचा सकता है क्या ?

न न न नहीं!

हुकलाता - हुकलाता ही मर गया हुकला –

भोकाल की तलवार उस वक्त कर रही थी तोतला के टुकड़े - टुकड़े -

छोड़ दो भोताल तुम्हें इस तोतले की कसम।

तुझे छोड़कर क्या फिर यहां मौत का ताण्डव खिलवाना है!

तुलताते हुए ही मर गया तोतला भी

महाराज विकासमोहन के करीब पहुंचे दोनों –

यह ठीक है कि तुम दोनों ने हमारी व नगर की रक्षा की, किंतु कानून तो कानून ही होते हैं।

हम आपसे केवल एक दिन की मोहलत चाहते हैं महाराज, इन सब हत्याओं के पीछे छुपी महाचुड़ैल तन्त्रा को समाप्त करते ही हम दोनों खुद को आपके हवाले कर देंगे।

एक बार फिर चढ़ दौड़ा राजा के सिर पर कानून व नियम का जुनून –

ऐसा असम्भव है हम एक पल की भी छूट नहीं दे सकते।

उफ!

उस चोट ने बेहोश कर दिया राजा विकासमोहन को –

प्रकट हुआ तान्त्रिक टिल्लू –

तुम दोनों जाओ जल्दी! दुर्ग में महल पहुंचा दूंगा। जल्दी करो वक्त कम है।

धन्यवाद! आपने हमारी दोबारा सहायता की।

भोकाल व तुरीन उड़ चले महा चुड़ैल तन्त्रा की तलाश में –

महाराज को लेकर महल की तरफ चल पड़ा तान्त्रिक टिल्लू।

तुरीन की गुफा के बाहर उतरे दोनों –

तान्त्रिक टिल्लू ने हमें बिल्कुल सही मार्ग बताया तुरीन!

हां, प्रिय! अब हमें गुफा का द्वार खोलना है।

वह विशाल द्वार मुंह बाए दोनों के सामने खड़ा था।

दोनों ने निगाहें घुमायी–

वह द्वार खुलेगा उस चाबी से ही!

किन्तु ढाल लेकर यदि मैं उड़ा तो एक हाथ से वह चाबी कैसे पकड़ पाऊंगा?

समस्या गंभीर थी दोनों के समक्ष –

किन्तु तुरीन ने बहुत जल्दी ही उस समस्या का इलाज ढूंढ़ निकाला–

चल कपाला!

भोकाल सवार हुआ प्रथम बार कपाला पर–

और विशाल चाबी उठा वह बढ़ चला द्वार की ओर –

वाह! कपाला! तुम्हारी सुखद सवारी का शुक्रिया!

म्याऊं

चाबी घुमा दी उसने –

तत्काल खुल गया हीरे वाली गुफा का द्वार –

दोनों ने अपने कदम अंदर की तरफ बढ़ाए –

गहन सन्नाटा था हर तरफ –

ना जाने कैसी होगी महाचुड़ैल?

ना जाने कब कहां से कैसी मुसीबत टूट पड़े?

भयंकर आवाज ने भंग किया वह सन्नाटा –

धड़ाम

सामने आ खड़ा हुआ एक विशाल दानव—
महाचुड़ैल के घर में घुसने की जुर्रत कैसे की तूने भोकाल?
उसे यमलोक पहुंचाने आया हूं मैं!

दानव ने किया मुष्टि प्रहार, जिसे बचा गया भोकाल—
टकला के घूंसे से तो तू डर गया बच्चे! महाचुड़ैल से क्या खाकर टक्करायगा!
टकला की इस गर्वोक्ति से...

...खून खौल उठा भोकाल का—
तुझसे डर गया भोकाल! तेरे जैसे मच्छर से। ले खड़ा है भोकाल सीना ताने! आजमा ले अपना दमखम!

टकला ने घूंसों की बरसात कर दी—
अभी तेरी सारी जीदारी निकालता हूं। ये गया तेरा सीना आ आ आ!
भोकाल यथावत खड़ा रहा, टस से मस न हुआ! तो हुआ ही होगा टकला!

फिर भी उसने मुष्टि प्रहार जारी रखे—
तेरी हड्डियों का चूरा बना दूंगा!
किन्तु
भोकाल यथावत खड़ा रहा, टस से मस न हुआ!

हिम्मत ना हुरी टकला ने -
धप्प
टकला ! तू तो मेरी हड्डियों का चूरा ना बना सका । देख मैं बनाऊंगा तेरी हड्डियों का चूरा !
भोकाल ने रोका उसका मुष्टि प्रहार –

और ऐसा जबरदस्त मुष्टि प्रहार किया उसने कि उछल पड़ा वह विकराल दानव –
ठीक कहा ना ?
शाबास भोकाल ! बहुत खूब !
ताड़
म्याऊं

हुरी की गुफा की दीवार तोड़ता हुआ दीवार में ही फंस गया टकला –
वाह ! टकला का बज गया बाजा !
हाहा हा
चुरीन की बात पर हंसता हुआ भोकाल तब अचानक चुप हो गया ।

जब उसकी पीठ से टकराई एक पीड़ादायक शक्ति किरण –
उफ ! यह क्या ?
क्या हुआ भोकाल ?
और इससे पहले वे कुछ समझ पाते

ज्वाला वर्षा में घिर गए थे वे–

उफ! बचो तुरीन!

कपाला कहां है?

कपाला ने धारण किया शक्ति रूप। तुरीन उस पर सवार होने के लिए उछली –

म्याऊं

चल कपाला!

ज्वाला किरणों से बचाती हुई कपाला ले उड़ी तुरीन को –

शाबास कपाला!

कपाला भी ढाल की सहायता से उड़ता हुआ बच निकलने का रास्ता खोजने लगा–

वाकई महाचुड़ैल होगी तन्त्रा!

कुछ ही क्षण बाद वे ज्वाला वर्षा को धोखा दे सुरक्षित आगे बढ़ने लगे –

तुरीन! तुम ठीक तो हो ना?

हां! एक खरोंच भी ना आई है मुझे!

किंतु उस पल उन्हें ठिठकना पड़ा तब जबकि –

सामने मुंह फाड़े खड़ी नजर आई वह मुसीबत-
गरर्र्र्र्
गरर्र्
उफ! एक और रुकावट!
यह रुकावट भी हमें ना रोक पायेगी तुरीन

ढाल उठाये उड़ता हुआ भोकाल तलवार लेकर टूट पड़ा उन दैत्याकार मुंहों पर-
नहीं रोक पाएगी तुरीन
खच्च

कालरथ भोकाल उन्हें काल के गाल में पहुंचाता चला गया-
किसी तरह ना रुकेगा अब भोकाल!

तीसरी मुसीबत का गला भी काट दिया उसने-
किसी तरह ना रुकेगी अब तुरीन।
खच्चाक

क्रोध का दूसरा रूप नजर आ रहा था वह-
तन्त्रा कहां छुपी है तू। हिम्मत है तो सामने आकर युद्ध कर भोकाल से। छुप-छुपकर वार महाकायर करते हैं महायुद्धेल नहीं।
हीरे की चुभन गूंज उठी उसकी ललकार से -

तन्त्रा की हर शक्ति को तू काट चुका है भोकाल ! किन्तु यहां आकर तू कैद हो गया है। इस गुफा से तू बाहर नहीं निकल सकता। क्योंकि इस गुफा की कैद टूटेगी मेरी मौत के बाद।

और मुझे तू मार नहीं सकता, क्योंकि मैं अभी की अभी इस द्वार से बाहर निकल जाऊंगी। मेरे निकलने के बाद ना तो तू वह द्वार खोल पाएगा ना ही तू इस गुफा की दीवारें तोड़ पाएगा।

और मैं विकासनगर जाकर अपना दस हजार बलियों वाला कार्य पूरा करूंगी। अच्छा तो मैं चली।

नहीं तन्त्रा! मैं जिन्दा नहीं जाने दूंगा तुझे।

तन्त्रा भागी और पीछे दौड़ा भोकाल !

तन्त्रा ने किया तांत्रिक चमत्कार एक की जगह वहां दिखाई देने लगी दस तन्त्रा –

तू मुझे नहीं रोक सकता भोकाल, नहीं तो कोशिश करके देख ले।

उफ! जब तक मैं सही तन्त्रा को पहचानूंगा तब तक तो वह बाहर भी निकल जाएगी।

भोकाल का दिमाग चकरा दिया उस भ्रमजाल ने !

तभी भागती हुई तन्त्रा के नौ अक्स हो गए गायब–

अरे! यह क्या हुआ?

ओह शुक्रिया तुरोन!

असली तन्त्रा रह गई अब वहां !

भोकाल ने एक क्षण भी व्यर्थ ना किया –

खच्च

समाप्त हो गई महायुद्धन की कहानी !

राजमहल के प्रांगण में उमड़ा पड़ रहा था सम्पूर्ण विकासनगर-

महाबली भोकाल जिंदाबाद!

राजकुमारी तुरीन जिंदाबाद!

नरक की आग व महाचुड़ैल तन्त्रा का विनाश करने वाले अमर रहें!

भोकाल, तुरीन, शूतान, वेणु, महाराज विकासमोहन, श्वेता, भंकित महारानी व तांत्रिक टिल्लू सभी मौजूद थे वहां!

तांत्रिक टिल्लू खड़े हुए-

समस्त प्रजा के दिमागों में यह रहस्य घुमड़ रहा होगा कि कैसे सभी विकासनगर वासी भोकाल व तुरीन के विरुद्ध हो गये! कैसे बच गए भोकाल व तुरीन सजा-ए-मौत के बाद?

तन्त्रा ने जब देखा कि भोकाल व तुरीन उसकी सभी शक्तियां काट रहे हैं तब उसने समस्त विकासनगर को अपने तन्त्रजाल का निशाना बनाया और इसी कारण महाराज समेत सारी भोकाल व तुरीन को चाहने वाली प्रजा उनकी जानों की दुश्मन बन बैठी!

मैं उनके तन्त्रजाल के वक्त महारानी, राजकुमारी व राजकुमार के साथ नाईवाड़ नगर में था इसलिए हम सब तन्त्रजाल से मुक्त रहे!

मैंने अपने तन्त्र से तन्त्रा के बारे में पता लगाया और फिर सजा-ए-मौत की वजह से आखरी सांस गिनते भोकाल, तुरीन व कपाला को बचाया! अब तन्त्रा, नरक की आग व आप सब पर चढ़ा तन्त्र-जाल सब समाप्त हो चुका है! अब महाराज से अनुरोध है कि वे न्याय करें!

महाराज विकासमोहन खड़े हुए-

तांत्रिक टिल्लू! आपका धन्यवाद जो आपने समय रहते हमें व हमारी प्रजा को एक बड़े शापित अपराध से बचा लिया! हम व हमारी सारी प्रजा भोकाल, तुरीन व कपालाके साथ किए बर्बर बर्ताव के लिये शर्मिन्दा हैं और हम सब उनसे माफी चाहते हैं।

तांत्रिक टिल्लू सभी रहस्योद्घाटन के पश्चात बैठ गए!

प्रजावासी चीख उठे।

हमें माफ कर दो भोकाल!

हमारे दुर्व्यवहार के लिए हमें जो चाहे सजा दे सकते हो महाबली!

हम शर्मिंदा हैं।

हमें माफ कर दो भोकाल!

भोकाल तत्काल उठ खड़ा हुआ—

माननीय महाराज व प्यारे प्रजावासियो, माफी मांगकर हमें शर्मिंदा ना करो। जो हुआ सब भ्रम जाल में हुआ। हमारे दिल में कोई शिकवा नहीं है।

भोकाल जिंदाबाद

भोकाल अमर रहे!

तभी उसने धमाका किया—

अब विकासनगर पर छाये दुख सभी काले बादल हट चुके हैं। अब मैं अपनी कसम पूरी करूंगा अग्निप्रवेश करके। और मैं जानता हूं कि मेरे प्यारे नगरवासी मुझे हरगिज नहीं रोकेंगे, क्योंकि वे भोकाल की...

...जुबान की कीमत जानते हैं।

चारों तरफ सन्नाटा सा खिंच गया।

टिसते हृदय से उठा शूलान। कठिन स्वर निकला उसके मुंह से और चिपट गया भोकाल से—

मैं तुम्हें रोकूंगा नहीं मित्र! किंतु तुमसे सदा यही शिकायत रहेगी कि मित्र को छोड़कर जा रहे हो!

हर उपस्थित आंख से टपक रहे थे आंसू।

भोकाल के साथ उठकर चल पड़ी तुरीन—

चलो प्रिय!

तुम किसलिए?

तुम्हारे सुख-दुख, जीवन-मृत्यु सब में साथ रहने की कसम जो उठाई है मैंने।

फिर ना कुछ कह सका भोकाल!

अपनी-अपनी कसमों को पूर्ण करने के लिये अग्नि-प्रवेश कर गए तीनों –

नहीं..नहीं..नहीं...नहीं...नहीं..नहीं sss! रुक जाओ भोकाल...

अश्रुपूर्ण आंखें लिए बोल कुछ ना रहे थे वे, किन्तु उनके दिल चीख-चीख कर कह रहे थे, नहीं-नहीं-नहीं, रुक जाओ भोकाल, रुक जाओ तुरीन! रुक जाओ कपाला!

समाप्त

प्रिय पाठक मित्रो, भोकाल, तुरीन व कपाला नहीं रुके, किन्तु हां, दुख ना कीजिए, क्योंकि अगली चित्रकथा में वे फिर आएंगे चमत्कारी ढंग से। जी हां '**चमत्कारी भोकाल**' में! चमत्कारी भोकाल होगी भोकाल सीरीज की चित्रकथाओं की बिल्कुल चमत्कारी नयी श्रृंखला।

चमत्कारी भोकाल

जी हां, सही पहचाने आप, यह है परीलोक। जहां भोकाल का जन्म हुआ था। अब आप जल्दी से अपने विचार एवं सुझाव एक छोटे से कागज पर लिखकर मेरे पास भेज दें।
आपके पत्रों के इंतजार में ~ आपका मित्र संजय गुप्ता, 1603-दरीबा कलां, दिल्ली-1100●6

Printed at Japan Art Press, New Delhi-28. ☎ 5708884